an>

Title: Regarding Famine in Bihar due to drought and flood situation.

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद): माननीय सभापति महोदय, आज मैं ज विषय सदन में रखने जा रहा हूँ, वह मेरे प्रदेश बिहार के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

महोदय, सत्र शुरू होने के दिन से ही मैं लगातार इस विषय को शून्यकाल उठाने के लिए सूचना देता रहा हूँ। लेकिन एक दिन भी इसके लिए लॉटरी में मे नाम नहीं आया। मैं आपका आभारी हूँ कि आज भी मेरा नाम नहीं आने के बावजू मुझे बोलने का अवसर दिया।

महोदय, मैं जिस दिन से इस विषय को उठा रहा हूँ, उस समय बिहार के 3 जिलों में से तीन जिलों को छोड़कर लगभग 35 जिले अकाल की चपेट में थे। उसके बाद स्थिति में परिवर्तन हुआ, अब उत्तर बिहार के कुछ जिले बाढ़ की चपेट में है अभी की स्थिति यह है कि बिहार का एक बहुत बड़ा हिस्सा, जिसमें उत्तर बिहार के भी कई जिले हैं और दक्षिण बिहार के लगभग सारे जिले हैं, जिनमें मेरे संसदीय क्षे के औरंगाबाद और गया, दोनों जिले हैं। वहाँ अनावृष्टि की स्थिति यह है कि धान के रोपनी की बात तो छोड़ दीजिए, वहाँ आज के दिन पीने के पानी का भी संकट है। आपके माध्यम से, इस समस्या के समाधान के लिए भारत सरकार से निवेदन करन चाहता हूँ कि एक तात्कालिक योजना बनाई जाए और इसके साथ-साथ एक दीर्घकालिक योजना भी बनाई जाए।

दीर्घकालिक योजना के संबंध में, मैं सुझाव के तौर पर कहना चाहता हूँ और य मांग करना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ उत्तर कोयल सिंचाई परियोजना है और इसके साथ ही बटाने जलाशय परियोजना है। अगर इन दोनों सिंचाई परियोजनाओं को पू करा दिया जाए, तो बहुत हद तक समस्या का समाधान हो सकता है। जो इलाके नहर के क्षेत्र में हैं, सोन नहर से जिन इलाकों की सिंचाई होती है, हालांकि इस नह की भी स्थिति अच्छी नहीं है। बाणसागर डैम, जो मध्य प्रदेश में है, जिससे बिहार क पानी मिलता है, उसमें भी कमी है। सोन नदी में भी जल का अभाव है। इसके संबं

में, एक सुझाव देने के साथ ही, मैं एक मांग भी करना चाहूंगा। जैसे अभी बिहार
एक तरफ बाढ़ है और दूसरी तरफ सुखाड़ है।

अत: यह जो इनफ-वॉटर है, यह जो बाढ़ का पानी है, फ्लड-वॉटर है, ए
दीर्घकालिक योजना बनाकर पाइपलाइन के माध्यम से इस इनफ-वॉटर को, इ
ज्यादा पानी को बिहार के उस हिस्से में पहुंचाया जा सकता है, जहां अभी लोग पी
के पानी का भी अभाव झेल रहे हैं। साथ-साथ कुछ तात्कालिक योजनाएं भी चलेंग
जिनसे कृषि मजदूरों का कुछ भला होगा। मेरा कुलमिलाकर, पूरे बिहार के लिए औ
खासकर दक्षिण बिहार के गया-औरंगाबाद जिले के लिए यह निवेदन है। जहां नह
नहीं है, वहां अभी तक धान का रोपन केवल दस प्रतिशत हुआ है। यह भी भार
सरकार की देन है कि वहां बिजली मुहैया हो रही है, जिससे लोगों ने बोरिंग-पम्प्स
दस प्रतिशत धान का रोपन किया है। अनावृष्टि की जो अभी स्थिति बनी हुई है, उस
वह धान बचने वाला नहीं है। खेतों में दरार खुले हुए हैं और जब बारिश होगी, तो व
फसल बचेगी अन्यथा वह नहीं बचेगी। अत: मेरा यह विनम्र अनुरोध है कि इस विष
पर चर्चा कराकर एक दीर्घकालिक और साथ-साथ तात्कालिक योजना बनाकर इ
समस्या से हम लोगों को समाधान दिलाया जाए। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।